दाम और मोल

लम्बा कद, तन्वंगी काया,
रंग है उसका गोरा।
काले लम्बे बाल है उसके,
दाम बताओ अब अपना।

बेटी मेरी अनपढ़ है,
मुँह पर उसके है ताला,
कठपुतली–सी कहा मानेगी,
दाम बताओ अब अपना।

सोना–चांदी में मोल करूँ,
या दे दूँ जमीन–मकान,
उसके ब्याह में पिस जाऊँगी,
दाम बताओ अब अपना।

दे दहेज भी झुलस गयी,
उस मईया की बिटिया,
अब शायद मईया जाने–
अनमोल थी उसकी बिटिया।

क्यों कर लेते है मोल–भाव?
हम अपनी ही बेटी का–
न जाने इस कुप्रथा ने,

निगली कितनों की बिटिया।

बेटी को मानो वरदान,
दो उसको शिक्षा और सम्मान।
बोझ नहीं अनमोल समझो–
दाम–मोल से उसे न बेचो।

संपर्क सूत्र

गायत्री शर्मा
Bhavans Vivekananda College
Sainikpuri Hyderabad Kendra–500094
B.Sc. Lf.Sc.– MGC III
Ph. No.– 8522097564